Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

डिजिटल युग के वैवाहिक सम्बंधों में संवादहीनता और अलगाव : मोहन राकेश के सन्दर्भ में

गीता कुमारी* डॉ.(प्रो.) अनुपमा सक्सेना**

* शोधार्थी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावटी विश्वविद्यालय, सीकर (राज.) भारत
** प्राचार्य, खंडेला महाविद्यालय, सीकर (राज.) भारत

शोध सारांश – यह शोध डिजिटल युग में स्त्री–पुरुष और उनके वैवाहिक सम्बंधों पर दृष्टि डालता है। इसमें इस विषय पर अध्ययन किया जाएगा कि किस प्रकार डिजिटल युग के सम्बंधों में संवादहीनता और अलगाव स्त्री–पुरुष के मध्य खाई उत्पन्न कर रहे है। वर्तमान युग में विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, पीढ़ीदर विचारगत भिन्नता, बेरोजगार युवा पीढ़ी,पश्चिमीकरण, उपभोक्तावादी मान्यताएँ ,आकर्षक और चकाचौंध रिश्तें इत्यादि कारण स्त्री– पुरुष सम्बंधों में अलगाव और खालीपन भरने में अपने–अपने स्तर पर योगदान दे रहे है।भारतीय विवाह संस्था सामाजिक ढांचे को संतुलित करने के लिए मजबूत आधार रही है। रिश्तों की बुनियाद इस संस्था के समाजीकरण पर ही निर्भर रही है लेकिन वर्तमान में इस विवाह संस्था पर कहीं न कहीं प्रश्नचिन्ह लग रहे है। आज के दौर में सोशल मीडिया के माध्यम से वैवाहिक रिश्तें बन रहे है और बिगड़ रहे है। जिससे दो लोगों के मध्य संवाद अंतराल और अलगाव भी बढ़ रहा है। चूंकि साहित्य समाज का दर्पण होता है और समाज में घटित घटनाएँ साहित्य का हिस्सा वैसे ही बनती है जैसे समाज में वह मौजूद होती है इसलिए साहित्य का प्रभाव समाज के प्रत्येक पक्ष पर पड़ता है। हिंदी साहित्य का प्रारंभिक आधार आदर्शवादी पक्ष को केंद्र में रख कर आगे बढ़ा लेकिन समयानुसार उसी साहित्य ने आदर्शवादी पक्ष में कई कमियां उजागर की और समाज के यथार्थवादी पक्ष को पाठक के समक्ष लाना उचित समझा। इस आदर्शवादी और यथार्थवादी पक्ष का सबसे ज्यादा प्रभाव स्त्री–पुरुष सम्बंधों के वैवाहिक जीवन पर पर पड़ा।

स्वतंत्रता के बाद हिंदी साहित्य में आधुनिक मानव के सम्बंधों की सूक्ष्मता उभर कर सामने आती है।यह सूक्ष्मता कथाकार मोहन राकेश के साहित्य में पाठक के समक्ष आती है। मोहन राकेश के साहित्य में स्त्री हो या पुरुष सभी पूर्ण की छटपटाहट हेतु नजर आते है। इनके साहित्य में स्त्री–पुरुष सम्बन्धों की विविध मनोवैज्ञानिक स्थितियां चित्रित हुई हैं। इनके पात्र एक रिक्तता का अनुभव करते है और पूर्ण प्राप्ति की ओर देखते है, जो कहीं न कही वर्तमान डिजिटल युग में भी वही रिक्तता दृष्टिगत होती है। मोहन राकेश के पात्रों के मध्य संवाद–अंतराल और अलगाव अत्यधिक है वहीं 21वी सदी के तीसरे दशक में आधुनिक रिश्तों की बुनवाट मोहन राकेश के कथा साहित्य के पात्रों के समान ही नजर आ रही है क्योंकि यहां भी संवाद–अंतराल और अलगाव अत्यधिक है। जिस प्रकार से आज डिजिटल युग में रिश्तें भावनात्मक कम और सांकेतिक ज्यादा हो गए है, वहीं राकेश जी के समकालीन साहित्य में भी रिश्तें भावनात्मक होते हुए भी सांकेतिक ही नजर आते हैं। एक तरफ स्त्री पात्र घर से बाहर निकलने और आत्मनिर्भर बनने की दौड़ में थी वही पुरुष उसी दौड़ में रिश्तों के बुनवाट की नई परिभाषा देने में लगे हुए थे। इस प्रकार उस समय के वैवाहिक जीवन में जो अलगाव था वो कहीं न कहीं आज के डिजिटल युग ने ओर ज्यादा बढ़ावा देने का कार्य किया है। प्रस्तुत शोध में वर्तमान डिजिटल युग के वैवाहिक सम्बन्धों को मोहन राकेश के साहित्य के संदर्भ में देखने का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होगा कि मोहन राकेश द्धारा चित्रित समस्याएँ आज के डिजिटल युग में ओर भी अधिक प्रासंगिक हो गई हैं।

शब्द कुंजी – डिजिटल, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, आत्मनिर्भरता, समस्याएँ, रिक्तता, भावनात्मक दूरी, अलगाव, संवादहीनता, वैवाहिक विघटन, पूर्ण–अपूर्ण, संस्कार, आदर्शवादी–यथार्थवादी, लॉन्ग डिस्टेंस, वर्क फ्रॉम होम।

प्रस्तावना – भारतीय समाज में विवाह संस्था सामाजीकरण की महत्वपूर्ण आधार रही है। यह न केवल सामाजिक बल्कि भावनात्मक, नैतिक और सांस्कृतिक सम्बंधों की भी आधार रही है। प्राचीन भारत अर्थात् पूर्व वैदिक,वैदिक, मध्यकालीन और आधुनिक काल में स्त्री–पुरुष सम्बंधों ने सृष्टि के सृजनात्मकता को नया आयाम दिया। भारतीय समाज में विवाह केवल दो व्यक्तियों का मिलन नहीं, बल्कि एक अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक, धार्मिक और नैतिक संस्था थी। इसका मुख्य उद्देश्य धर्म की रक्षा, परिवार की निरंतरता और पितृ ऋण से मुक्ति प्राप्त करना था। इसे सोलह संस्कारों में से एक प्रमुख संस्कार माना गया है। यह संस्कार अपने कर्तव्यों और अधिकारों का चक्र गतिमान रखते हुए नई पीढ़ी को जिम्मेदारी देने का कार्य करता था।

समय के साथ संस्कारों में विचारगत भिन्नता, आधुनिकीकरण, शहरीकरण, डिजिटलीकरण के कारण परिवर्तन शुरू हुए और समाज का वैवाहिक ढांचा बदलने लगा।हम देखते है कि ये बदलता हुआ ढांचा समाज, व्यक्ति और अन्य संस्थाओं के लिए एक चुनौती भरा रहा है। विवाह कभी परिवार और समाज की नींव हुआ करता था लेकिन वर्तमान डिजिटल युग में जीवनसाथी चुनने के बदलते मापदंड, विवाह की उम्र में बढ़ोतरी, महिला सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता, एकल परिवार का प्रचलन,लिव–इन रिलेशनशिप,तलाक और पुनर्विवाह के प्रति बदलता दृष्टिकोण इत्यादि कारण है जो स्त्री–पुरुष सम्बन्धों में बदलाव ला रहे हैं। रिश्तों के प्रति बढ़ता अविश्वास, अकेलापन, घुटन, हिंसा आदि विवाह की नींव को कमजोर कर

रहे हैं।

जब बात साहित्य की होती है तो साहित्य यानी स–हित की भावना से परिपूर्ण,जहाँ भावना को तर्क से ज्यादा महत्व दिया जाता है।जहाँ रचनात्मकता और कलात्मकता मनुष्य की संवेदनाओं पर आधारित होती है। हिन्दी साहित्य के गद्य और पद्य दोनों पक्षों में मनुष्य की संवेदनाओं और उनके सम्बंधों को स्थान दिया गया लेकिन पाठक के मन पर गद्य पक्ष ने सबसे ज्यादा प्रभाव डाला य क्योंकि गद्य में कहानी, उपन्यास,नाटक, आत्मकथा इत्यादि लिखें गए जो पाठक आसानी से समझ पाया और मनुष्य ने एक पात्र के रूप में उस गद्य या कथा साहित्य में अपने आपको पाया। हिंदी साहित्य में मानवीय सम्बंधों का व्यापक चित्रण प्रेमचंद के साहित्य से शुरू होता है जो आदर्शवादी होते हुए आदर्शोन्मुख यथार्थवादी और फिर समकालीन साहित्य में या नवलेखन दौर में यथार्थवादी,व्यक्तिवादी और अस्तित्ववादी बन कर उभरता है।

प्रेमचंद ने 'बड़े घर के बेटी' से लेकर 'पूस की एक रात' और 'कफन' तक मानवीय सम्बंधों को और विशेष रूप से वैवाहिक सम्बंधों की स्थिति को जिस प्रकार प्रकट किया है वो वर्तमान समाज में भी अपना स्थान रखती है। आज हम चांद तक जा रहे है, डिजिटलीकरण में मनुष्य का कार्य रोबोट कर रहे है लेकिन सम्बंधों का गणित आज भी वही है। आज भी प्रेमचंद की कहानी 'बड़े घर की बेटी' में जिस प्रकार रिश्तों की बुनावट है वो हर घर में मौजूद मिलेगी, आज भी 'कफन' कहानी की तरह आर्थिक तंगी परिवार के अस्वास्थ्य का कारण बनती है। आज भी 'गोदान' उपन्यास की तरह किसान परिवार मजदूर बनने पर मजबूर है। लेकिन प्रेमचंद और प्रेमचंदयुगीन साहित्य में ये समस्या आदर्शवादी रूप में विद्यमान है जहां सम्बंधों को बचाने का प्रयत्न किया जाता है।

यह समस्या नवलेखन काल में विशेष रूप से मोहन राकेश, राजेंद्र यादव और कमलेश्वर के साहित्य में मुखर से उभरकर सामने आती है। इन्होंने मानवीय सम्बंधों में जो समस्या है उसे यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। नवलेखन का दौर समाज में आदर्श प्रस्तुत न करके व्यक्ति और उसके सम्बंधों का यथार्थ प्रस्तुत किया है। इस दौर में व्यक्ति के अस्तित्व को महत्व दिया गया है न कि सामाजिक, आर्थिक और नैतिक धारणाओं को। राजेंद्र यादव ने इस पर अपनी टिप्पणी की है कि ष्विवाह यदि व्यक्ति की स्वतंत्रता को समाप्त कर दे, तो वह केवल सामाजिक अनुबंध रह जाता है, प्रेम नहीं।ष इसके अतिरिक्त कमलेश्वर कहते है कि ष्रिश्ते केवल सामाजिक व्यवस्था से नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं से जीवित रहते हैं। वही मन्नू भंडारी और प्रभा खेतान ने भी इस विषय पर अपने–अपने विचार प्रकट किये है। मन्नू भंडारी के शब्दों में 'पति–पत्नी का संबंध विश्वास और संवाद पर टिका होता हैय इसके अभाव में परिवार बिखर जाता है।' वही प्रभा खेतान का संपूर्ण साहित्य स्त्री स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता पर लिखा गया है। वो लिखती है कि ष्स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता उसके आत्मसम्मान की पहली शर्त है। इस प्रकार हम पाते है कि मोहन राकेश के समकालीन लेखकों ने भी स्त्री–पुरुष सम्बंधों और वैवाहिक सम्बंधों में उत्पन्न संवादहीनता और अलगाव को सूक्ष्म तरीके से पाठक के समक्ष प्रस्तुत किया है। यही समस्या वर्तमान डिजिटल युग का हिस्सा जो कि दूसरों तरीकों में आज भी विद्यमान है। सोशल मीडिया का बढ़ता हस्तक्षेप और दुरूपयोग रिश्तों की खाई को गहरा करता था रहा है।

मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' के पात्रों में संवादहीनता और अलगाव स्त्री–पुरुष संबंधों की समस्या के रूप में उभरकर सामने आता हैं। यह नाटक आधुनिक जीवन में प्रेम, महत्वाकांक्षा और मानवीय संबंधों के द्वंद्व को अत्यंत संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत करता है। कालिदास और मल्लिका एक–दूसरे से प्रेम करते हैं, लेकिन समय के साथ उनके बीच संवाद समाप्त होने लगता है। कालिदास उज्जयिनी जाकर राजाश्रय स्वीकार कर लेते हैं। इसके बाद वे मल्लिका से अपने मन की बात खुलकर नहीं कहते और न ही उसके जीवन की परिस्थितियों को समझने का प्रयास करते हैं। यही संवादहीनता अंततः उनके संबंध को तोड़ देती है। कालिदास मल्लिका से कहते है कि –'मैंने जो कुछ लिखा है, उसमें तुम सदा उपस्थित रही हो।' यह कथन बताता है कि कालिदास के मन में मल्लिका का स्थान बना रहता है, परंतु उन्होंने यह बात समय रहते उससे साझा नहीं की। उनके बीच भावनात्मक संवाद का अभाव संबंधों में दूरी पैदा करता है। कालिदास की महत्वाकांक्षा उन्हें मल्लिका से दूर ले जाती है। दूसरी ओर मल्लिका परिस्थितियों के कारण एकाकी जीवन जीने को विवश हो जाती है। वर्षों बाद जब कालिदास लौटते हैं, तब तक दोनों के जीवन की दिशा बदल चुकी होती है, जहाँ मल्लिका कालिदास से कहती है कि –

'तुम वह नहीं रहे, जिसे मैं जानती थी।'

यह कथन स्पष्ट करता है कि समय और परिस्थितियों ने दोनों के बीच गहरा मानसिक और भावनात्मक अलगाव पैदा कर दिया है। इस प्रकार हम देखते है कि मोहन राकेश के साहित्य और समाज की समस्याऐं वर्तमान डिजिटल युग में अलग रूप में ज्यों की त्यों मौजूद है। आज के डिजिटल युग में विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से सामाजिक दूरी कम लेकिन भावनात्मक दूरी में अलगाव आ गया है। ऑरकुट ऐप से लेकर इंस्टग्राम तक दुनिया ने मानवीय सम्बंधों में संवेदनाओं को कम कर दिया। आज की वर्तमान पीढ़ी ने रील्स के इर्द–गिर्द अपनी ऐसी दुनिया बना दी है जो लोगों के मध्य संवाद और अलगाव की खाई उत्पन्न कर रही है। आज की युवा पीढ़ी के पास अपने परिवार तक के लिए समय नहीं रहा है। सोशल मीडिया पर बनते रिश्तें अविश्वास और छल की नींव पर होते है क्योंकि बिना जाने बिना समझे और बिना भौतिक उपस्थिति के रिश्तों में अलगाव पहले से ही मौजूद होता है,जो विवाह के बाद वो और बढ़ जाता है। एक व्यक्ति से बिना संवाद किए अपना जीवन साथी चुनना वर्तमान डिजिटल समाज की भयावह घटना होती जा रही है। जिस प्रकार आए दिन तलाक के मामले या एक–दूसरे से अलग रहने के मामले सुनने को मिलते है उससे आभास होता है कि दाम्पत्य जीवन आज भी संवाद अंतराल के कारण कितनी दूरी बना रहा है।

इसी प्रकार मोहन राकेश के नाटक 'आधे–अधूरे' वैवाहिक जीवन की नीरसता और अधूरे रिश्तों कि इच्छा को हमारे समक्ष लाता है जिसका मुख्य कारण सावित्री के द्वारा एक पूर्ण पुरुष की चाह है।

नाटक की मुख्य पात्र सावित्री जिस पुरुष के संपर्क में आती है, उस पुरुष को अपूर्ण ही पाती है। महेन्द्रनाथ और सावित्री के मध्य अलगाव, सावित्री और उसके बच्चों के मध्य संवाद अंतराल, बड़ी लड़की और मनोज के बीच अलगाव ये बताता है कि तात्कालीन पारिवारिक स्थिति को राकेश जी ने बहुत ही सूक्ष्म तरीके से प्रस्तुत किया है। जब बड़ी लड़की घर आती है और कहती है कि 'दो आदमी जितना ज्यादा साथ रहें, उतना ही ज्यादा एक–दूसरे से अजनबी महसूस करने लगते हैं।' ये कथन बताता है कि किस प्रकार दाम्पत्य जीवन में संवादहीनता और अलगाव भावनात्मकता को शून्य कर देता है। सावित्री और महेंद्रनाथ के आरोप व कटाक्ष वैवाहिक जीवन में घुटन–सी घोल देते है जहाँ सावित्री कहती है कि 'तुमने मुझे कभी कुछ नहीं

दिया।' वहीं महेंद्रनाथ कहते है कि 'मैं इस घर में सिर्फ एक रबर-स्टैंप हूँ।' एक दाम्पत्य जीवन में कितनी भावनात्मक नीरसता है ये इन दोनों कथनों से संपूर्ण नाटक का भाव पाठक के समक्ष आता है। वर्तमान डिजिटल युग के स्त्री-पुरुष के मध्य जो अपूर्णता है वो मोहन राकेश के साहित्य में मुखर रूप से विद्यमान है। वर्तमान में सावित्री की तरह हर कोई पूर्णता की प्राप्ति करना चाहता है चाहे पूर्णता सामाजिक, आर्थिक, नैतिक या फिर भौतिक हो।

वर्तमान सोशल मीडिया ने व्यक्ति के सोचने की क्षमता को इतना कमजोर कर दिया है कि महेंद्रनाथ की तरह वह अपने पारिवारिक जीवन से विमुख रहता है जिससे सम्बंधों में अलगाव मानसिक स्तर तक हो गया है।

इस प्रकार मोहन राकेश के अन्य उपन्यास जैसे- 'एक और जिदंगी' में दांपत्य जीवन की विडंबना,'न आने वाला कल' में पति-पत्नी के बीच भावनात्मक दूरी और 'अंतराल' में पति-पत्नी के मध्य रिक्त कोष्ठ की समस्या उभरकर सामने आती है। मोहन राकेश के कथा साहित्य में स्त्री-पुरुष वैवाहिक संबंधों की सबसे बड़ी त्रासदी संवादहीनता और अलगाव है। उनके पात्र एक ही घर में रहते हुए भी मानसिक, भावनात्मक और वैचारिक स्तर पर एक-दूसरे से कटे हुए दिखाई देते हैं। यह संवादहीनता केवल शब्दों की कमी नहीं, बल्कि विश्वास, आत्मीयता और संवेदनात्मक जुड़ाव के टूटने का संकेत भी है।मोहन राकेश के कथा साहित्य में स्त्री-पुरुष अपने मन की बात एक-दूसरे से साझा नहीं कर पाते। वे साथ रहते हैं, लेकिन एक-दूसरे की भावनाओं को समझने में असफल रहते हैं।उनके एक उपन्यास का कथन है कि -

'हम दोनों साथ रहते हुए भी जैसे बहुत दूर हो गए थे।'

यह कथन उनके संबंधों में संवाद के अभाव और मानसिक दूरी को व्यक्त करता है। पति-पत्नी की विचार, अपेक्षाएँ और जीवन-दृष्टि अलग-अलग हो जाती हैं। वे एक-दूसरे को समझने के बजाय स्वयं में सिमट जाते हैं। जैसे 'अँधेरे बंद कमरेय में पति-पत्नी के संबंधों में असंतोष, अकेलापन और मानसिक दूरी स्पष्ट दिखाई देती है। मोहन राकेश के पात्र अपने व्यक्तिगत संघर्षों और इच्छाओं में इतने उलझे रहते हैं कि दाम्पत्य संबंधों को समय और संवेदना नहीं दे पाते। इससे संवाद धीरे-धीरे समाप्त हो जाते है। आधुनिक शहरी जीवन, महत्वाकांक्षा और व्यक्तिवाद के कारण पति-पत्नी के बीच निकटता कम होती जाती है। साथ रहने के बावजूद वे भावनात्मक रूप में अकेले रहते हैं। संवादहीनता अंतत: अविश्वास, तनाव और अलगाव को जन्म देती है। कई बार यह स्थिति वैवाहिक संबंधों के टूटने या केवल औपचारिक रूप से बने रहने तक पहुँच जाती है। मोहन राकेश के कथा साहित्य में वैवाहिक संबंध प्रेम और विश्वास के बजाय अकेलेपन, असंतोष, संवादहीनता और मानसिक अलगाव से ग्रस्त दिखाई देते हैं। उनका साहित्य यह संकेत देता है कि जब पति-पत्नी के बीच खुला संवाद समाप्त हो जाता है, तब संबंध केवल सामाजिक संस्था बनकर रह जाता है और उसकी आत्मीयता समाप्त होने लगती है।

'अंतराल' में पति पत्नी के मध्य एक रिक्त कोष्ठ है और ये रिक्त कोष्ठ की मांग ही उन्हें इस संबंध की स्वाभाविकता को स्वीकार नहीं करने देती है। इस उपन्यास के संवाद में हमें दो लोगों के मध्य संवाद होते हुए भी एक खालीपन सा दिखता है, 'श्यामा की आंखों में कुछ था...' एक तरह का अपनापा और उसमें मिलीं हुई उदास-सी उत्सुकता। इसके अतिरिक्त उस वातावरण में कुछ था... चारों ओर का खुलापन,भीगापन और शाम का गहराता रंग। वह बाँहें पीछे रखें लता के बारे में सभी कुछ श्यामा को बताने लगा था...कि उस दुबली-सी लड़की को केंद्र में रखकर कैसे उसने आगे के जीवन की कल्पना का ताना-बाना बुना था। 'आकर्षण' से हटकर एक और आकर्षण होता है, व्यक्तित्व का चुंबक आकर्षण, जो शारीरिक आकर्षण से कई अधिक मन को खींचता है। उस आकर्षण का अनुभव मुझे पहली बार उसी को लेकर हुआ था।' इस प्रकार हम पाते हैं कि वर्तमान डिजिटल युग में भी रिश्तें श्यामा और कुमार की तरह उलझनों के शिकार बने हुए हैं। इन रिश्तों में परिवार की इज्जत और समाज का हस्तक्षेप इस प्रकार गूंथा हुआ होता है कि कुछ सम्बंध डोर की भांति उलझकर रह जाते है।कई बार व्यक्ति पारिवारिक और सामाजिक संस्था से इतना बेबस होकर अनचाहे रूप से अपना जीवन किसी अन्य व्यक्ति के साथ जीता है जिससे मानसिक अलगाव और संवादहीनता पहले से तय हो जाती है। यह स्थिति वर्तमान डिजिटल युग में है जहाँ आज भी समाज और परिवार का हस्तक्षेप उतना ही है जो रिक्त कोष्ठ को पहले से तय करके रखते है। वर्तमान युग जो चांद पर पहुंच रहा है, महिलाओं की आत्मनिर्भरता सिद्ध कर रहा है और रोबोटिक्स और कृत्रिम बुद्धिमता से विज्ञान और समाज चला रहा है लेकिन सम्बंधों के अलगाव को भर पाने में सिद्ध साबित नहीं कर पा रहा है।

इसी प्रकार मोहन राकेश के समकालीन साहित्यिक विवेचन को अगर हम देखें तो हम पाते हैं कि उनके समकालीन लेखकों ने भी स्त्री-पुरुष वैवाहिक सम्बंधों की समस्याओं को अति सूक्ष्म रूप से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। विशेष रूप से महिला लेखिकाओं के साथ-साथ पुरुष लेखकों ने भी इस समस्या को बिना किसी झिझक के लिखा है। राजेंद्र यादव के उपन्यासों और उनकी 'एक दुनिया समानान्तर' कहानी संग्रह में ऐसी बहुत सी कहानियाँ हैं जो वैवाहिक सम्बंधों पर प्रकाश डालती है। उनका उपन्यास 'एक इंच मुस्कान' जो मन्नू भंडारी के साथ मिलकर लिखा गया। इसमें स्त्री-पुरुष संबंधों की विडंबना और आधुनिक जीवन की भावनात्मक शून्यता को प्रस्तुत किया गया है। इसमें दिखाया गया है कि प्रेम और विवाह केवल सामाजिक संस्थाएँ नहीं हैं, बल्कि इनके सफल होने के लिए पारस्परिक विश्वास, संवाद और संवेदनशीलता आवश्यक है। उपन्यास की पात्र अमला कैलाश के बारे में सोचती है कि 'नहीं जानती आज जो कुछ हुआ है उसे लेकर क्या लिखूं, किन शब्दों में लिखूं?यह भी नहीं जानती कि जो कुछ हुआ वह मेरे लिए अच्छा हुआ या बुरा बस इतना जानती हूं कि आज का दिन साधारण दिनों से बहुत भिन्न गुजरा और आज का झगड़ा साधारण झगड़ों की तरह समाप्त नहीं होगा। मन बार-बार कहता है कि आज से मेरी और कैलाश की मित्रता का अध्याय सदा के लिए समाप्त हो गया। मन लाख कहें, पर फिर भी एक विश्वास नहीं होता कि कितने वर्षों की मैत्री,घनिष्ठ मैत्री आधे घंटे की बात में समाप्त हो जाएगी....सदा-सदा के लिए समाप्त हो जाएगी। पर क्या सचमुच ही यह जो अघट घट गया, यह केवल आधे घंटे की बात का परिणाम है?'

इसी प्रकार मन्नू भंडारी का उपन्यास 'आपका बंटी' में शकुन और अजय का तलाक बंटी को इस प्रकार झकझोर देता है कि बाल- मनोवैज्ञानिक मन समझ ही नहीं पाता है। अलगाव और बिना संवाद और समझ से बने रिश्तें स्वयं के साथ-साथ बच्चों के बाल मन को भी अत्यधिक प्रभावित करते हैं। वहीं अज्ञेय का उपन्यास 'अपने-अपने अजनबी' आधुनिक हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक और अस्तित्ववादी उपन्यास है। इसकी मुख्य विषयवस्तु मनुष्य के अकेलेपन, अजनबीपन, अस्तित्व-संकट, स्त्री-पुरुष संबंधों और जीवन-मृत्यु के बोध पर केंद्रित है। इसमें पात्रों के

मध्य संवाद किस प्रकार अजनबीपन दिखाते है कि उसकी एक झलक इस कथन में है कि 'मेरी बीमारी की बात बार-बार दोहराने की जरूरत नहीं है- मैं जानती हूं कि मैं बीमार हूं। मैं क्या जानबूझकर हुई हूं, या कि तुम्हें सताने के लिए बीमार हुई हूं। और स्वतंत्रता-कौन स्वतंत्र है? कौन चुन सकता है कि वह कैसे रहेगा,या नहीं रहेगा? मैं क्या स्वतंत्र हूं कि बीमार ना रहूं- या की अब बीमार हूं तो क्या इतनी भी स्वतंत्र हो कि मर जाऊं? मैंने चाहा था की अंतिम दिनों में कोई मेरे पास ना हो। लेकिन वह भी क्या मैं सुन सकी? तुम क्या समझती हो कि इससे मुझे तकलीफ नहीं होती कि जो मैं अपनों को भी नहीं दिखाना चाहती उसे देखने के लिए-भगवान ने एक-एक अजनबी भेज दिया?' इस प्रकार अजनबीपन और अलगाव की ये समस्या वर्तमान डिजिटल युग में कितनी भयावह हो चुकी है कि परिवार तक के सम्बंध मन में गांठ से लगने लगते है। लोगों में सोशल मीडिया की वजह से बातचीत की दूरी घटी है, लेकिन भावनात्मक अलगाव, मानसिक दूरी और अजनबीपन ज्यों का त्यों है।

अब हम वर्तमान डिजिटल युग के वैवाहिक सम्बंधों की तुलना मोहन राकेश के साहित्य से करें तो हम निम्न बिंदुओं पर पहुँचते हैं। दोनों युग अपने समय के वैवाहिक सम्बंधों की उदासीनता को उभारते हैं। एक तरफ बातचीत का माध्यम आमने-सामने बैठकर है पर मन से अलगाव है। दुसरी तरफ वर्तमान डिजिटल युग में बातचीत के माध्यम विस्तृत है लेकिन यह विस्तृत रूप व्यक्ति को और ज्यादा विकल्प देता है जिससे रिश्तों में अजनबीपन और संवाद व्यवस्थित रूप से नहीं हो पाता है। एक दूसरे की कमियाँ , सोशल मीडिया की देखा देखी जिदंगी जीने की लालसा, चकाचौंध भरी इच्छाएँ पूर्ण करने की आस, पश्चिमीकरण का प्रभाव इत्यादि है जो आज भी अलगाव को बढ़ावा दे रहा है। वर्तमान युग की युवा पीढ़ी ऑनलाइन व्यस्तता से इतना बेबस है कि वैवाहिक सम्बंध 'वर्क फ्रॉम होम' के इर्द-गिर्दधंसता-सा नजर आ रहा है। संवाद के बहुत माध्यम है, एक-दूसरे से बहुत कम समय की दूरी तय करके मिलने के बहुत साधन है लेकिन लॉन्ग डिस्टेंस भी रिश्तों में अलगाव बना रहा है। सोशल मीडिया के बावजूद बातचीत में कमी यह दर्शाता है कि वर्तमान युवा पीढ़ी विवाह से कितना खौफ रखता है। आज विवाह की उम्र का एक स्तर से ज्यादा बढ़ जाना भी बहुत बड़ी समस्या हो गई है क्योंकि एक समय के बाद प्रत्येक व्यक्ति अपनी स्वतंत्रता, खुलापन, समझदारी, आत्मसम्मान की चाह रखता है जो वर्तमान युवा पीढ़ी में अक्सर कम देखने को मिलती है। एक प्रसिद्ध समाजशास्त्री Anthony Giddens अपनी पुस्तक 'The Transformation of Intimacy' में लिखते है कि 'आधुनिक संबंध तभी तक टिकते हैं जब तक दोनों पक्षों को उनसे संतुष्टि मिलती रहती है।' इसी संदर्भ में Sherry Turkle का एक कथन है कि - 'हम पहले से अधिक जुड़े हुए हैं, लेकिन पहले से अधिक अकेले भी हैं।' वर्तमान युवा पीढ़ी अपने स्तर पर एक उम्र अकेले बिता देती है और जीना सीख लेती है, इसलिए बाद का जीवन उसका आदतन हो जाता है। इस क्रम में अगर अकेले जिये हुए व्यक्ति का मजबूरन विवाह किया जाता है तो ऐसे संबंध वैवाहिक अलगाव और विघटन को जन्म देते है। वर्तमान युग के प्रेम और विवाह मात्र सामाजिक स्तर पर रहे है, जहाँ व्यक्तिगत भावनाएँ दब-सी जाती है। कुछ वैवाहिक सम्बंध प्रतिष्ठा, दहेज, वंशवृद्धि, किसी व्यक्ति की उपलब्धता एवं आदि के विचार तक सीमित है जो प्रेम न होने पर भी अपनी भविष्य की सुरक्षा हेतु बनाए जाते है। इस प्रकार वर्तमान डिजिटल युग के युवा, उनके रिश्तें, उनमें पनपी भावनाएं उसी प्रकार अलगाव और संवाद अंतराल रखती है जैसे मोहन राकेश के कथा साहित्य में भी बीज रूप में मौजूद थी। फर्क बस इतना है कि आज सोशल मीडिया के प्रभाव के कारण पाठक के समक्ष अत्यधिक मामलें इस सन्दर्भ में आ रहें हैं। इनमें मात्रात्मक भेद हो सकता है लेकिन गुणात्मक नहीं। इस प्रकार डिजिटल युग में सोशल मीडिया के प्रभाव में अलगाव और विघटन ने वैवाहिक जीवन को बहुत सूक्ष्म रूप से प्रभावित किया है।

मोहन राकेश के स्वयं का जीवन भी इन्हीं कठिनाइयों से गुजरा है जिससे इन्होंने इस मुद्दे को बहुत ही बारीकी से प्रस्तुत किया है। इनकी निजी जिदंगी में ऐसे ही अलगाव की समस्या से ग्रसित रही। उनके दो विवाह असफल और तीसरा विवाह जीवन के अंतिम 9 सालों तक सफल रहा। यही समस्या राजेंद्र यादव और मन्नू भंडारी की निजी जीवन में रही कि प्रेम विवाह होने के बावजूद एक समय के बाद उनका तलाक होता है।

इस प्रकार कई बार लेखक जो जीता है उसे बहुत ही सूक्ष्मता से अपने साहित्य में पिरोता ताकि पीढ़ी दर पीढ़ी उस समाज से तुलना आसानी से की जा सके। वर्तमान युग में पीढी की बढ़ती तुलना ने भी एक नई बहस को जन्म दिया है। आज पीढ़ी के मध्य शाब्दिक अंतराल भी आ गया है जहां मिलेनियल और जेन-जी शब्द अपने-अपने स्तर पर बहुत प्रचलन में है। सन् 1988 से 1997 तक की पीढ़ी मिलेनियल और सन् 1998 से 2010 की पीढ़ी जेन-जी कहलाती है। इनके मध्य विचारों की भिन्नता, विवाह को लेकर इनके ख्याल, शारीरिक नजदीकीयों को लेकर विचार सबमें भिन्नता यह दर्शाती है कि आने वाली पीढ़ी को सोशल मीडिया ने कितना व्यस्त और प्रभावित कर दिया है। किस प्रकार इंस्टाग्राम की रिल्स और फेसबुक की पोस्ट इनके दिनचर्या का इतना बड़ा हिस्सा बन गया है कि एक कमरे का कोना इनका अपना होना माना जाने लगा है । अंत: वर्तमान डिजिटल व्यस्तता ने विवाह के साथ-साथ मन की स्थिति में भी अलगाव पैदा कर दिया है।

निष्कर्ष - डिजिटल युग ने संचार के साधनों को व्यापक बनाया है, किन्तु वैवाहिक संबंधों में भावनात्मक संवाद को सुदृढ़ करने में यह सदैव सफल नहीं रहा है। तकनीकी निकटता के बावजूद पति-पत्नी के मध्य मानसिक दूरी और संवादहीनता की समस्या बढ़ती दिखाई देती है। मोहन राकेश के कथा साहित्य में चित्रित दांपत्य संबंधों की जटिलताएँ आज के समय में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। उनके पात्र जिस अकेलेपन, असंतोष और भावनात्मक रिक्तता का अनुभव करते हैं, वही स्थिति आज डिजिटल युग के अनेक वैवाहिक संबंधों में दिखाई देती है। आज भी वो भावनात्मक दूरी रिश्तों में कड़वापन घोलती है जहां शारीरिक नजदीकी होने के बावजूद मानसिक नहीं है। आज अपनी पसंद, समझदारी युक्त तथा लिव-इन रिलेशनशिप वाले रिश्ते भी मन को संतुष नहीं कर पा रहे है। प्रत्येक व्यक्ति की एक इच्छा होती है कि उसका साथी साथ रहने से परे उसको समझ सके एक-दूसरे की आर्थिक, सामाजिक और मानसिक स्थितियों को समझ सके ,लेकिन परिवारिक असंतोष और स्वयं की आदतें एक-दूसरे के रिश्तों को अलगाव के कगार पर ला रहे हैं । इस प्रकार मोहन राकेश का साहित्य समकालीन वैवाहिक जीवन की समस्याओं को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम सिद्ध होता है। उस साहित्य के आधार पर इस शोध को प्रमुखता से वर्तमान युग की वैवाहिक संबंधों को आंका गया है जो दो युग की एक कहानी पाठक के सामने रखता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

प्राथमिक स्रोत:-

1. आषाढ़ का एक दिन – मोहन राकेश, राजपाल एंड सन्स , कश्मीरी गेट , दिल्ली-6
2. अंधेरे बंद कमरे – मोहन राकेश, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. , 1-बी नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली
3. न आने वाला कल – मोहन राकेश, राजपाल एंड सन्स , कश्मीरी गेट, दिल्ली-6
4. एक और जिंदगी – मोहन राकेश, राजपाल एंड सन्स, कश्मीरी गेट , दिल्ली-6
5. अंतराल – मोहन राकेश, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली
6. आधे-अधूरे – मोहन राकेश, राधाकृष्ण प्रकाशन, जी -17 , जगतपुरी, दिल्ली
7. मोहन राकेश की डायरी – राजपाल एंड सन्स , कश्मीरी गेट , दिल्ली-6
8. एक इंच मुस्कान राजेंद्र यादव और मन्नू भंडारी, राजपाल एंड सन्स , कश्मीरी गेट , दिल्ली-6
9. आपका बंटी – मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, जी -17 , जगतपुरी, दिल्ली
10. अज्ञेय – अपने-अपने अजनबी, वाणी प्रकाशन ग्रुप, दरियागंज ,नई दिल्ली
11. मोहन राकेश : संपूर्ण कहानियाँ

द्वितीयक स्रोत:-

1. मोहन राकेश: ' व्यक्तित्व और कृतित्व' – डॉ. गणपति चंद्र गुप्त
2. नामवर सिंह – कहानी : नई कहानी
3. रामदरश मिश्र – हिन्दी कहानी : अंतरंग पहचान
4. डॉ.नागेन्द्र – हिंदी साहित्य का इतिहास
5. मधुरेश – नई कहानी का विकास
6. बच्चन सिंह – हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास
7. Anthony Giddens – The Transformation of Intimacy.

****